समाज के प्रतिबिम्ब

काव्य संग्रह

डॉ. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

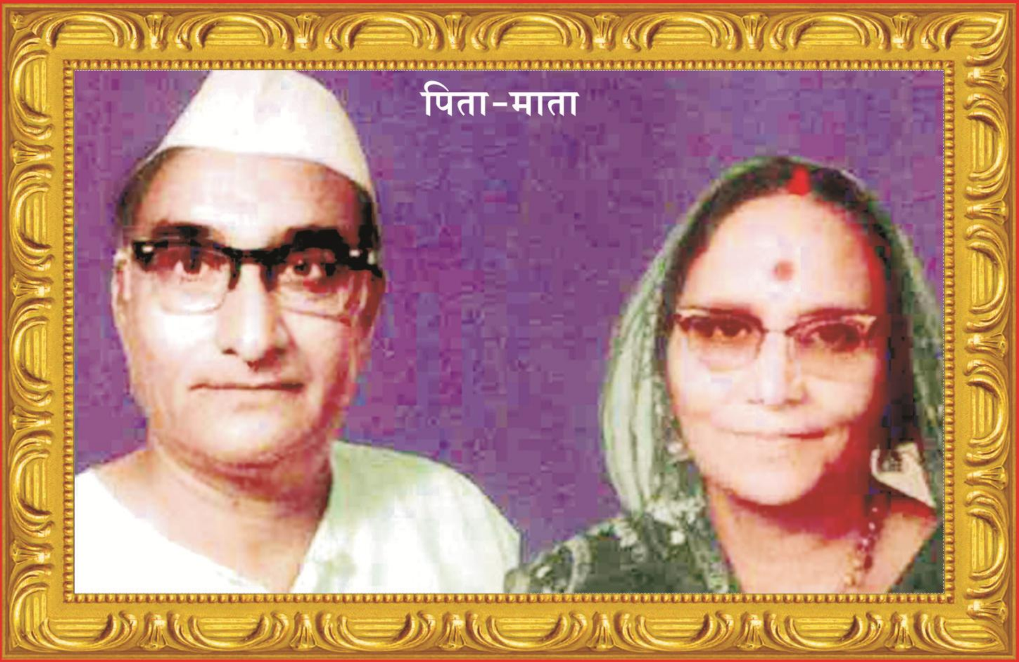

स्मृति शेष- श्री चंद्रिका प्रसाद जी मोर - श्रीमती सरोज मोर, कटनी (मायका पक्ष)

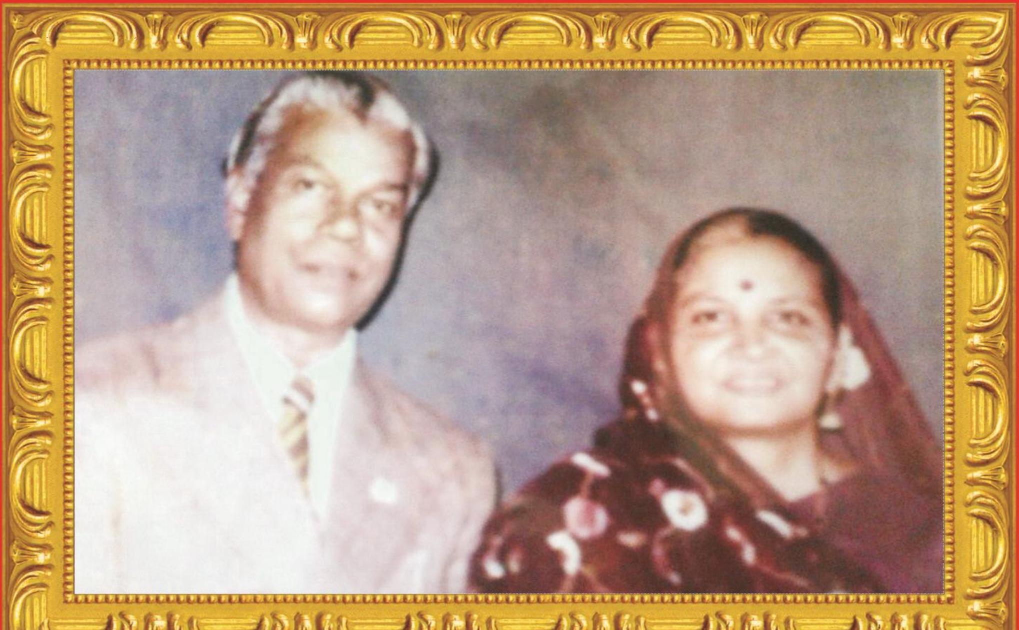

स्मृति शेष- श्री अन्नतलाल पिपरसानिया - श्रीमती चंदा पिपरसानिया, जबलपुर (ससुराल पक्ष)

समाज के प्रतिबिंब

काव्य संग्रह

डॉ मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - "978-93-5372-025-4"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाश- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ९४२४७६५२५९

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१९, **मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

SAMAJ KE PRATIBIMB BY MANORAMA GUPTA (PIPARSANIYA)

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेशित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाशाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

स्मृतिशेष

पू. माता-पिताजी
श्री चंद्रिका प्रसाद, श्रीमती सरोज मोर कटनी (म.प्र.)
पू.सास-ससुर जी
श्री अनंतलाल-श्रीमती चंदा पिपरसानिया
जबलपुर (म.प्र.)

समाज के प्रतिबिम्ब

(काव्य संग्रह)

‘यह पुस्तक रूपी रत्न समर्पित, करती हूँ बारम्बार विनय। आशीोों का
वरद-हस्त रख, करें अनुगृहित हमें वृन्द द्वय।।
माननीय माता-पिता एवं माननीय सास-ससुरजी
की पुण्य स्मृति में
डॉ. मनोरमा रमेशचन्द्र पिपरसानिया द्वारा
सादर समर्पित

मेरी बात

“साहित्य समाज का दर्पण है।” अतएव समाज की छवि संवारने के लिये यह अतिआवश्यक है कि विविध धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और राट्रीष्य-अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों संबंधी तथ्यों के सकारात्मक और नकारात्मक स्वरूपों को प्रतिबिम्बित करके लेखनीबद्ध किया जाये। यद्यपि भावों का अभिव्यक्तिकरण किसी देशी-विदेशी भाषा के माध्यम से किया जा सकता है तथापि मातृभाषा में लिपिबद्ध साहित्य, समाज कल्याण की दिशा में आशाजनक एवं प्रभावी परिणाम दे सकेगा, ऐसी मेरी आत्मानुभूति है।

वर्तमान समय में सुशिक्षित नागरिक भी यदि मूकदर्शक बनकर, परिवेश को विकृति एवं विनाश के गर्त में ढकेलकर अकर्मण्यता का परिचय देंगे तो किसी भी सभ्य, विकासशील राट्र के लिये यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण होगा। देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम एकमात्र युद्धभूमि में रक्षार्थ आत्म-बलिदान करना नहीं है वरन् निजकर्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते हुए, मनसा, वाचा, कर्मणा सामाजिक परिवेश को सुगंठित करना भी है।

अंततः मैंने भी समाज के विभिन्न वर्गों को दृष्टिगत करते हुए स्वविचारों को समीक्षार्थ आपके सम प्रस्तुत किया है। आशा है पाठकगण इस पुस्तक का अध्ययन, पठन-पाठन करके अपने विचार एवं सुझाव मुझे अवश्य प्रेरित करेंगे।

धन्यवाद

रचनाकार
डॉ.मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)
‘रमा-रमेश’
जबलपुर

अनुक्रमणिका

1.	उत्तराखंड की त्रासदी	7-8
2.	चेतावनी संहारकर्ता की	9
3.	सांई बाबा! एक अलौकिक शक्ति	10
4.	सांई बाबा 'राम' क्यों?	11
5.	जीत ममता के स्वर की	12-13
6.	माँ का आर्तनाद	14
7.	बेटी की चाह	15
8.	दूरदर्शन धारावाहिकों में नारी	16-17
9.	माँ! क्यो?	17
10.	शिक्षक इक्कीसवीं सदी का	18-19
11.	शिक्षक की चाह	20
12.	शिक्षा जगत के कलंक	21
13.	अगर शिक्षक न होते	22
14.	अगर इंजीनियर्स न होते	23
15.	अगर डॉक्टर्स न होते	24
16.	डॉक्टर्स का घिनौना रूप भी	25
17.	अगर कृषक न होते	26
18.	कृषकों का आत्मदाह- एक निवेदन	27-28

19.	गौ वंश की पुकार	29
20.	तानाशाह की ताजपोशी- उत्तर कोरिया में	30-31
21.	जय जय भारत जय मातृभूमि	32

उत्तराखंड की त्रासदी

सोलह जून दो हजार तेरह को आया हिमालय में भूचाल।
अनायास अर्धरात्रि को उत्तराखंड प्रदेश हो गया बेहाल।।१।।

ताश के पत्तों से गिरे जहाँ होटल, लॉज और भवन।
पानी के वेग में बह गये वहाँ हजारों दोपहिये वाहन।।२।।

दिल दहल उठा था सुन-सुनकर रोज मौत के समाचार।
कैसे थमेगा आँधी, तूफान, बाढ़ का कहर करते विचार।।३।।

उत्तराखंड की त्रासदी से मची थी चहुँ ओर हाहाकार।
आपदा की इस विषम घड़ी में भी वहाँ छाया भ्रष्टाचार।।४।।

सौ-सौ रूपये में वहाँ बिका एक-एक गिलास दूध पानी।
पीने को मजबूर थे, प्यासे बच्चे, जवां वृद्ध जैसे सैलानी।।५।।

महँगी हो गयी थीं जरूरत की चीजें, सस्ती थी जिंदगानी।
हजारों रूपये में मिली छाया, ऐसी हो रही थी वहाँ बेईमान।।६।।

अपनों से बिछुड़ कर आगे बढ़े, काँप उठी जुल्मों से जमीं।
सैकड़ों अस्मितायें लुटी, बैंक लुटे, पिस गया आम आदमी।।७।।

धार्मिक स्थलों पर भी देखी सुनी मनु यों में ऐसी दुबुर्द्धि।
गंगा स्नान, प्रभु का दर्शन भी न कर सका आत्मशुद्धि।।८।।

धिक्कार ऐसे शैतानों को, मानवता के हैं ये कलंक।
सब कुछ गंवा कर, अनेक धनवान भी हो गये रंक।।९।।

लाखो हाथ उठे करूणा के, करोड़ रूपयों की सहायता मिली।
किंतु आश्चर्य सहयोग राशि, राहत, में भी वहाँ राजनीति चली।।१०।।

क्यों आया ऐसा संकट बतलाओ भोले कर कैलाशपति।
हृदयविदारक उस जल प्लावित स्थल में कितनी लाश पटी।।११।।

कोई कहता 'धारा देवी' को हटाने सेही ऐसा संकट आया।
रक्षा करती थी वे घाटी की, उनके क्रोध से पर्वत डगमगाया।।१२।।

श्रद्धाभाव छोड़ दर्शनार्थियों ने, इसको भ्रमण स्थल बनाया।
छेद दिया पर्वत का सीना, वहाँ इतना भवन निर्माण कराया।।१३।।

कल-कल का स्वर गूंज रहा था सुरम्य अलकनंदा तट पर।
हाय-हाय का रूदन मच गया, जान बचा भागे सब झटपट।।१४।।

वहाँ अंधाधुंध कटाई करके, प्रकृति के सारे नियमों को छोड़ा।
अनगिनत कार, बस बाइक से, यातायात कानूनों को तोड़ा।।१५।।

सह न पायी भार पापों का, मानो पूरी घाटी ही डोल गयी।
अरबों की संपदा बह गयी वहाँ, जर-जमीन मिट्टी मोल हुई।।१६।।

समझो प्रकृति के नियमों को, व्यवसायीकरण उतना ही करना।
जिससे बचे रहें पृथ्वी पर, पेड़-पौधे, पर्वत, नदियाँ और झरना।।१७।।

'शिव' सुंदर हैं, 'शिव' सच्चे हैं, बोलो सत्यं शिवं सुंदरम्।
पर्यावरणीय सुरम्य स्थल की छटा रहने दो, मानुष मनोरम।।१८।।

चेतावनी संहारकर्ता की

सदियों से आसन लगा के बैठे थे शिवशंकर कैलाशपति।
बारिश आयी, बादल फट गये, डिगा न मंदिर एक रति।।१।।

नंदी बाबा का पहरा था या स्वयं प्रभु का ही था चमत्कार।
लुढ़क-लुढ़क चट्टानें आयीं, दिया मंदिर को दृढ़ आधार।।२।।

जहाँ सैकड़ों भवन ढह गये, वहाँ पर मंदिर में हुई न कोई क्षति।
वाह! प्रभु की लीला न्यारी, किसी को दर्शन, किसी को सद्गति।।३।।

समझ सको तो समझो मानव, आस्थाओं से न करो खिलवाड़।
नदी, पर्वत, झरनों की नैसर्गिक शोभा से मत करना छेड़छाड़।।४।।

जब-जब हुई धर्म की हानि, तब-तब प्रकृति ने कहर बरसायें।
लोलुप, धर्मविमुख जनसमुदायों ने प्रभु पर भी आरोप लगाये।।५।।

गर्म करो है धर्मावलंबियो, अपने आराध्य को शांति से पूजो।
अनुचित स्वार्थ साधना हेतु मत, आपस में ही लड़ो, झगड़ों, जूझो।।६।।

मत छीनो वन्य जीवों का आश्रय और प्रकृति की ये सुरम्यता।
वरना अकथनीय, अदर्शनीय हो जायेगी उसकी आक्रामकता।।७।।

हमारी आस्थायें अंधविश्वास नहीं, हैं मानवता की सीढ़ी।
अनुशरण करेंगे यदि सच्ची श्रद्धा से सुधरेंगी भटकी पीढ़ी।।८।।

सांई बाबा! एक अलौकिक शक्ति

क्या उच्च कुलों में जन्म लेने से,
बन जाते हैं हर इंसान महान।
दिव्य अलौकिक शक्ति बिना क्या?
होंगे पूर्ण गरीबों असहायों के अरमान।।

क्या राजघरानों में होता है जिन,
मानव-पुत्रों का जन्म और उद्‌भव।
क्या जनसमाज के मानस पटल पर,
हो सका कभी उनका राज संभव।।

पल रहे जो विशाल अट्टालिकाओं में
सभ्य समाज के राजसी ठाट-बाटों में।
वे दर्द भला कैसे समझ सकेंगे,
उनका जो सोते है टूटी खाटों में।।

साई, भूखे को भोजन कराते थे।
रोगियों के रोग-पीड़ा मिटाते थे।
गरीब बच्चों माताओं की टेर सुन,
मीलों दूर वे पैदल दौड़े जाते थे।।

क्यों ऐसे सज्जन संत पर उँगली उठाते?
सांई अस्तित्व पर व्यंग्यों की बौछार करते।
ईश्वर के नाम पर हजार आडम्बर रचते,
रखो सदभाव सबसे जो जिसको भजते।।

सांई बाबा 'राम' क्यों?

सांई बाबा को जनआस्था ने भगवान राम कहा।
क्योंकि उन सा तपस्वी जीवन बिताकर कष्ट सहा।।

सबरी के जूठे बेर प्रभु राम ने प्रेम से खाये।
वैसे सांई भी रूखा-सूखा भोजन गरीबों संग खाये।।
कुशा की सैया बिछा भूमि पर, पंचवटी में सोये राम।
पेड़ के नीचे शिलाखंड पर सांई विराजे बना निज धाम।।

क्या हुआ हमें ज्ञान नहीं महलों में जन्में या झोपड़ों में।
पले गरीबी की गोदी में या लखपते अमीर रोकड़ों में।।
हिन्दू संत संप्रदायों में रहे या मुस्लिम सूफी फकीरों में।
भारत भूमि में जन्मे या अन्यत्र किसी पुण्य स्थल में।।

भारत भूमि ही कर्मक्षेत्र अब शिरडी उनका धाम।
वे पुरू। नहीं थे कलियुग के महापुरूष महान।।
मानव सेवा ही उनका परम धर्म, है यही पहचान।
सच्चा कर्मयोगी ही पूजनीय कहते है ये वेद पुराण।।

वास्तव में कर्म ही बनाते है इंसान को महान।
पूजते श्रद्धालु उन्हें भगवान शिव और राम समान।।

राम, कृष्ण, शिवशंकर सम अभिषेक भक्तों ने कराया।
देवतुल्य मानकर श्रद्धावश सांईभक्तों ने मंदिर में बैठाया।।
गढ़े सिंहासन रत्न जड़ित सोने चांदी का छत्र लगाया।
उनका आसन तो शिलाखंड था, सिर पर पेड़ों की छाया।।

सावधान हों ऐसे श्रद्धालुजन जो आडम्बर फैलाते।
आदर्शों को भूल, उनके सिद्धांतों से भटक जाते।।
सच्चे सांई भक्त वे हैं जो दीन-दुखी की सेवा करते।
मंदिर, मूर्ति, सज्जा, आडम्बर छोड़ उनके आदर्शों पर चलते।।

जीत ममता के स्वर की

माँ की लोरी में छिपा हुआ था इतना प्यार दुलार।
आँखें खोल दी लाड़ले ने जो था अतिशय बीमार।।१।।

हैरान थे सभी यह देखकर, कैसे हुआ ये चमत्कार।
इलाज कर करके जहाँ सब डॉक्टर गये थे हार।।२।।

ढाई साल के मासूम बेटे कपिल को था तेज बुखार।
अचानक ही हो गया था वह निमोनिया का शिकार।।३।।

माँ को थी हर जगह से सत्य उम्मीद की ही दरकार।
पिता की कोशिशें भी भेद न पायी थी कोई दीवार।।४।।

हर डॉक्टर का इलाज जैसे हो रहा था बेकार।
हँसते खेलते बच्चे को जकड़ गया ऐसा बुखार।।५।।

रूपया पैसा उन्होंने जैसे पानी की तरह बहाया।
पर एक रत्ती फर्क भी उसके स्वास्थ में नहीं आया।।६।।

सरकारी निजी सभी अस्पतालों का द्वार खटखटाया।
झाड़-फूंक, नीम हकीम, और देशी इलाज भी करवाया।।७।।

अलवर के डॉक्टर के दिमाग में अचानक एक विचार आया।
म्यूजिक थैरेपी का उपाय उसने कपिल की मॉ को सुझाया।।८।।

माँ की आवाज में डॉक्टर ने तुरंत एक सी.डी. बनवायी।
जिसमें माँ ने अपनी आवाज में बच्चे को लोरी सुनायी।।६।।

माँ के स्वर सुनकर उसके मस्तिष्क में कंपन सा आया।
सोये हुये बेटे ने आँखे खोली, फिर थोड़ा सिर घुमाया।।१०।।

जीत गयी ममता, माँ ने लाल को अपने गले से लगाया।
आनंदित होकर डॉक्टर बोले वाह-वाह प्रभु तेरी माया।।११।।

रूक न पायी माँ की आँखों से बहती अश्रुधारा।
खेलेगा मेरा लाल अब भगवत मेरी गोद में दोबारा।।१२।।

नयी तकनीक से उस डॉक्टर ने इलाज किया सारा।
लाख लाख धन्यवाद तेरा ओ जग के पालनहारा।।१३।।

शिशु के लालन पालन में माँ का है आद्वितीय सहारा।
उसके लिये तो हर माँ ने, सदा अपना जीवन ही वारा।।१४।।

माँ का आर्तनाद

गर्म सार हो, सिसक-सिसक कर, माँ अपने बेटों से ये पूछे।
बतलाओ! मेरे जिगर के टुकड़ों! रह गये क्या संस्कार अधूरे।।

अस्मितायें लूटते वक्त तुम्हें क्या विस्मृत हो जाती है माता।
तुम्हारे ऐसे घृणित कृत्यों से बेटों, मेरा भी दिल दहल जाता।।

माँ, बहन, बहु-बेटियों का आदर करना, है पुरूषों का कर्तव्य।
वे ही नाते-रितेदार, पड़ोसी कर रहे यौन उत्पीड़न जैसे दुष्कृत्य।।

भाग-दौड़ के इस जीवन में, यदि थोड़ा समय दिया होता।
तो यद माँ के अरमानों पर, ऐसा कुठाराघात नहीं होता।।

कैसे बोझ उठा पाऊँगी मैं, हे भगवान मुझे ही उठा लेते।
इससे तो निःसंतान ही रहती, कुल कीर्ति बेटे गंवा देते।।

क्यों जन्म दिया ऐसे कपूत को, लज्जा से मेरा सिर झुक जाता।
क्या मैं स्वयं दो। हूँ, कुमार्ग पर कदम मेरे लाल का बढ़ जाता।।

नहीं! नहीं माँ! तुमने मुझको सदैव सत्कर्मों की राह दिखायी।
किंतु कुसंगति, गंदे संदेश दूपरिवेश ने मेरी मन-बुद्धि भटकायी।।

क्षमा करो! माँ नही करूँगा दुराचार, दो मुझको शुभाशीष।।
है नारी का हर रूप वंदनीय, याद रखूगा मै लेकर सौगंध ईश।।

बेटी की चाह

मैं स्वतंत्र जन्मी थी भू पर,
फिर किसने जकड़ा जंजीरों में।
क्या यही कसम खायी थी?।
बोलो! भारत माँ के वीरों ने।।

मै खेली जिनकी बाँहों में,
क्यों उनके लिये अभिशाप बनी।
निकाली समाज ने ये परम्परा,
या फिर यह अपने आप बनी।।

सुरक्षा के मुख सा बढ़ रहा दहेज,
धन की चकाचौंध में नारी हुई निस्तेज।
ममता से मजबूर जनक झुक जाते,
बारात लौटने के डर से हो जाते अचेत।।

कहता है हर ग्रंथ सभी का,
पति-पत्नी है रथ के दो पहिये।
फिर क्या यह अन्याय नहीं है,
सत्य बात निज मुख से कहिये।।

कब तक बलि चढ़ायी जायेंगी,
मात-पिता की दुलारी बेटियाँ।
कहो! कौन काट सकेगा मेरी,
परम्पराओं की अनोखी बेड़ियाँ।।

शिक्षा ही है वह बेजोड़ अस्त्र,
जो तुझे बंधनमुक्त बनायेगा।
करबद्ध प्रार्थना करती समाज से,
पढ़ा-लिखाकर मान बढ़ायेगा।

दूरदर्शन धारावाहिको में नारी

आजकल -

इक्कीसवीं सदी के नये दौर में,
टी.वी. सीरियल्स की भारी धूम।

देखकर -

आधुनिक घर देखकर होता है हमें ऐसा आभास।
सदनारियों का नहीं वरन् यहाँ है डाइनों का वास।।

बेरहमी से -

कैसे अपने ही घर परिवारों को वे मिटाती हैं।
नित्य घृणित अनोखे ढंगों से उन्हें सताती हैं।।

क्या कहें -

आपस में ईर्ष्या-द्वे, घृणा, बाक-द्वन्दता फैलाती हैं।
सास, ननद, भाभी, देवरानी, जिठानी को रूलाती हैं।।

तोड़कर -

मान मर्यादायें खानदान की, पैसा उड़ाती हैं।
दया, प्रेम, सहानुभूति की बलि वे चढ़ाती हैं।।

कारनामों से -

अपने ही पतियों को कैसे उँगलियों पर नचाती हैं।
उठाकर आँखों से लाज का पर्दा वे भाग जाती हैं।।

बेशरमाई है -

नित उनके तन पर से कपड़े, घटते चले जाते हैं।
नये लिव्ह-इन और डेट्स-कल्चर बढ़ते जाते हैं।।

दो ही हैं -

ऐसे सीरियल्स जो नयी पीढ़ी को भड़काते हैं।
अलील अदाओं के खुले प्रर्दान से बिगाड़ते हैं।।

आज भ्रमित -

ऐसी युवतियाँ भी जो सत्मार्ग पर अपने पैर बढ़ाती है।
बहिनजी कहकर उनका, ये पतिता मजाक उड़ाती हैं।

धन्य थी-

वे भारतीय माँ, बहनें, पत्नियाँ और बहू बेटियाँ।
परिवार की मानमर्यादा हेतु दे देती थी कुर्बानियाँ।।

बंद करे-

प्रतिबंधित करें आवाज उठायें ऐसे सीरियल्स के खिलाफ।
मूकदर्शक न बनें, मांगे, समाज हित में शासन से इंसाफ।।

सँवारें हम-

संगठित होकर भारतीय नारी की आदर्श छवि बचायें।
भद्दे विज्ञापनों से बचाकर, बहु-बेटियों को खूब पढ़ायें।।

संदेश दें-

त्यागें नारियाँ स्वयं ही पाश्चात्य शैली की विकृति।
बढ़ते विषैले प्रभाव से उबारें, बचायें अपनी संस्कृति।।

भारतीय नारी-

तुम्हारे आचार-विचार, भाषा और पहनावा ही है पहचान।
संपूर्ण विश्व में अपने सौम्य रूप से ही बढ़ायी तुमने शान।।

माँ! क्यों??

माँ! क्या दर्द छिपाये बैठी हो,
जो करती अपनी ही परछाई का अंत।
नौ महीने पाला कोख में जिसको,
अब क्यों मजबूर हुई माता की अंक।।

कहीं मालूम आरोही को कुंये में फेंका,
कहीं नन्हीं मुस्कान को झाड़ियों में झोंका।
पेट की आग बुझाने बेटी को ही बेचा,
माया की मर्डर हिस्ट्री में, बेटी पर न सोचा।।

कैसे मरी आरुषी, सपनों की हजादी,
ममता की मूरत माँ तोड़ो चुप्पी मजबूरी।
यदि तुम ही निराश हो, जाओगी माँ,
कैसे बेटी बचाओ, आस होगी पूरी।।

शिक्षक इक्कीसवी सदी का

आया कैसा जमाना........!

इक्कीसवीं सदी में देखिये,
शिक्षक ज्ञान आलोक फैलाने,
कुर्सी पर आसीन उन्हें है पढ़ाना।। आया.....।१।
उधर विद्यार्थी सामने बैठकर,
मोबाइल अपने कान में लगाकर,
तल्लीन हो सुनता रसीले तराना।। आया......।२।
शिक्षक हाथ में चॉक लिये,
यामपट पर कुछ लिख रहे,
उनको नया पाठ है समझाना।। आया..... ।३।
उधर तान छात्र मोबाइल में,
मनोरंजक मैसेज पढ़ रहा,
कक्षा में बैठना तो है बहाना।। आया......।४।
शिक्षक क्रोध से तमतमाये,
लाओ! मोबाइल दो चिल्लाये,
कल से यह कक्षा में नही लाना।। आया.....।५।
छात्र कुटिलता से मुस्कुराया,
फिर मन ही मन बुदबुदाया,
सर! मुझे थोड़ा बाहर जाना।। आया..... ।६।
शिक्षक कान पकड़कर बोले,
क्यों? तुम शिष्टाचार भूल भी,
ठीक हैं! मुझसे ठिठोलियाँ बहाना।। आया.....।७।
विद्यार्थी ने फोन कर पापा को बुलाया,

वे बोले-डरो नहीं! मैं बस अभी आया,
मारकर बेटे को, गढ़ रहे कहानियाँ।। आया...... ।८।
शिक्षक बोले आपको है गलत फहमी,
लाड़ला है आपका अत्यधिक ऊधमी,
नहीं! माफी मांगिये अन्यथा जेल जाना।। आया..... ।९।
नहीं मांगूंगा माफी, चाहे सिर कटवा दो,
उदंड है बेटा आपका इसे समझा लो,
सच कहता हूँ जीवन भर पड़ेगा पछताना।। आया...... ।१०।
शिक्षा के मंदिर हैं नहीं है थियेटर,
जहाँ बैठकर छात्र पढ़ेंगे बेतुके मेटर,
आप जैसे अभिभावक ने बनाया है बेगाना।। आया..... ।११।
संभल जाइये आप! लाड़ इतना देना,
भूल जायें न ये, आदर्श शिक्षा ही लेना,
नीम से कड़वे बोल पड़ेंगे इसे चबाना।। आया......।१२।
शिक्षा का उद्देय नहीं केवल पढ़ाना,
भटके हुये बच्चों को है राह पर लाना,
कच्चे घड़े हैं ये, हमें ही इन्हें पकाना।। आया.....।१३।
सॉरी सर! मैं थोड़ा भटक गया था,
पुत्रप्रेम में मन थोड़ा अटक गया था,
धन्य हैं! आप, सबकी आँखें खोलना।। आया......।१४।
सुनो, समझो फिर बोलो ऊँची बोली,
दुश्मन नहीं शिक्षक जो छात्रों को डाँटते,
वास्तव में वे, जानते कसौटी पर आंकना।। आया....।१५।

शिक्षक की चाह

चाह नहीं है प्यारे शिष्यों, इन महंगे-महंगे उपहारों की।
चाह नहीं है बुके गुलदस्तों गेंदा गुलाब के पुष्पहारों की।।१।।

चाह नहीं है हमें तुम्हारे, भव्य समारोह सत्कारों की।
चाह नहीं है, शिक्षक, गुरू को, इन खर्चीले से अंदाजों की।।२।।

चाह नहीं मीठा नमकीनों, न ही इन स्वल्पाहारों की।
नहीं जरूरत है प्यारे बच्चों, इन आडम्बर सत्कारों की।।३।।

पर एक अर्ज है एक चाह है, यदि मान सको तो मानो।
हमें चाह है केवल शिष्यों, तुमसे मृदु व्यवहारों की।।४।।

चाह हमारी आज यही है, ज्ञानार्जन हेतु करो अथक प्रयास।
कभी किसी भी धर्म जाति का, मत करना बच्चों उपहास।।५।।

चाह तुम्हारे लिये यही है, आडम्बर तज बनो चरित्रवान।
मात-पिता और गुरूजनो का, करना जीवन पर्यन्त ही मान।।६।।

चाह यही है प्यारे शिष्यों, करो दुर्व्यसनों का तुम परित्याग।
काम जगत में ऐसे करना, शिक्षक गण को हो तुम पर नाज।।७।।

शिक्षा जगत के कलंक

शिक्षक को मात-पिता सम जाना आज वे ही बेईमान बन बैठे।
परीक्षाओं में पास कराने को छात्रों से मनचाहे नोट रूपेया ऐठे।।

लाखों का खेल हुआ दो में मेडिकल छात्रों के एडमीशन में।
मेघावी कुशाग्र बुद्धि के विद्यार्थी, ढकेल दिये अगले सेशन में।।

पढ़-पढ़कर बेहाल हुये, नहीं हिम्मत बची थी उनकी सॉसों में।
मध्यम दर्जे के मात-पिता तो डूबे पढ़ाई, कोचिंग के कर्जों में।।

उम्मीदों पर जब पानी फिर जाता, बच्चे आत्मदाह भी तब करते।
आरक्षित बच्चों का चयन देख, ईर्ष्या से अहिंसक कार्य करते।।

प्रसिद्ध नामी कोचिंग संस्थानों से परीक्षा पूर्व ही सेटिंग करवाते।
कहीं-कहीं तो इनके समूह के व्यक्ति ही परीक्षा केन्द्र पहुंच जाते।।

क्या होगा जब चयनित ये अयोग्य छात्र, शल्य चिकित्सा कार्य करेगें।
उचित ज्ञान, उचित इलाज बिन सरकारी अस्पताल में गरीब ही मरेंगे।।

दोषी ही कौन? भ्रमित युवा, अभिभावक की अपेक्षायें या महत्वाकांक्षायें।
अन्यथा लोलुप शिक्षकगण जो उन्हें दूषित मार्ग हेतु स्वयं विवश बनायें।।

निष्पक्ष न्याय व्यवस्था से ही संभव, रिश्वतखोरी पर नियंत्रण।
किंतु राजनीतिज्ञ, लक्ष्मीपति ही तो उनको दे रहे खुले आमंत्रण।।

यदि शासकीय महाविद्यालय और संस्थायें ही आज नही जागेंगी।
विशाल जनसंख्या हेतु सपनों का भारत वे कैसे गढ़ पायेंगी।।

अगर् शिक्षक न होते

वर्णमाला, शब्द ज्ञान का नियमित अभ्यास कौन कराता।
भाषा, विज्ञान, गणित के जटिल प्रश्न भला कौन समझाता।।
प्रत्येक विषय में परिपूर्ण कोई व्यक्ति नही हो सकते।
अगर शिक्षक न होते.......।

वेद, पुराण, गुरू ग्रंथ साहिब, बाइबिल, कुराण लिखे पढ़े न जाते।
ये कफल मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा और गिरिजाघर की न बढ़ाते।।
विविध राष्ट्र की विविध भाषायें कैसे हम जान पाते।
अगर शिक्षक न होते......।

संगीत, नृत्य, पाक कलाओ, जन जीवन में नीरसता आती।
वास्तुशिल्प काष्ठ जैसी ये चौसठ कलायें लुप्त-प्राय हो जाती।।
जग में लय, ताल, सुर सरगम भी न रह जाते।
अगर शिक्षक न होते.......।

पाषाण युग से रोबोट युग तक की यात्रा भी न होती।
मोबाइल, कम्प्यूटर, स्कूटर, कार मशीने भी न बन पाती।।
बिना सरस्वती पुत्रों के, लक्ष्मी-पुत्र भी अधूरे होते।
अगर शिक्षक न होते.......।

माता, पिता, परिवार-जन, बच्चों को लाड़ प्यार ही देते।
ज्ञान चक्षु खोलने, शिक्षकगण उनको आचार-विचार भी देते।।
बारम्बार प्रणाम, शिक्षक को पृथ्वी देव यही कहलाते।
अगर शिक्षक न होते...।।

अगर इंजीनियर्स न होते

इंजीनियर्स हैं वे अनुपम हस्तियाँ,
जो दे रहे जनजीवन को मस्तियाँ।
बच्चे, बूढ़े, युवा ऐसी मुस्कान न बिखेरते,
अगर इंजीनियर्स न होते.....

विश्व में उनकी है जितनी भी उपलब्धियाँ,
शब्दों में बांधने की लेखनी में नहीं शक्तियाँ।
हरों से गाँवों तक रोजगार धंधे ही न होते,
अगर इंजीनियर्स न होते...

ये गगनचुम्बी बहुमंजिला इमारतें न होती,
बांध, ब्रिज, खूबसूरते चौराहे, सड़कें न होती।।
वास्तु ज्ञान वर्षा बिना पतझड़ के सूखे पत्ते होते,
अगर इंजीनियर्स न होते.....

ये सजी संवरी दिनोंदिन बढ़ती फैक्ट्रियाँ न होती।
बड़ी मशीनरी क्रेन, शिप, हवाई जहाज, जेट न होते।।
बिना दृष्टिपुंज के आंखे होकर भी अंधे होते।
अगर इंजीनियर्स न होते..

अगर एक्सरे, सोनाग्राफी, सीटी स्केन मशीनें न होती,
तो घरों अस्पतालों से केवल चीत्कारें सुनाई देती।
बिना सुलभ साधनों के जनजीवन सस्ते होते।
अगर इंजीनियर्स न होते..

समस्याओं में घिरे घरों में बंद कठपुतलियाँ होते,
यदि न्यूज पेपर फोन मोबाइल टी.वी. कम्प्यूटर न होते।
बिना मजबूत कड़ी के, टूटते बिखरते रिश्ते होते,
अगर इंजीनियर्स न होते...

अगर डॉक्टर्स न होते

न दीन दुखी बीमारों की सेवा होती न सुख चैन होते।
रोगी, अपाहिज जीवन भर अपनी दुर्दशा पर रोते।।
धरती आकाश पाताल लोक में सर्वत्र शांति खोजते।
अगर डॉक्टर्स न होते......
यदि नीम-हकीम, झाड़-फूंक झोलाछाप चिकित्सक होते।
जादू-टोना, गलत इलाज से मनुष्यों की जान लेते।।
बिना अंर्तपरीक्षण के कैसे बीमारियों के ज्ञान होते।
अगर डॉक्टर्स न होते.......
हर ओर से आर्ती, चीत्कार की दर्दीली आवाजें
बनकर कोई जीवनदाता प्रियजनों को बचा लें,
दुर्घटनाग्रस्त इंसानों के इलाज कैसे संभव होते,
अगर डॉक्टर्स न होते.....
सुहागिन स्त्रियों की मांग के सिंदूर-उजड़ जाते,
अनेक बहनों से भाई, माताओं से बेटे बिछड़ जाते,
दर्द से तड़फते बच्चों की क्रन्दनध्वनि कैसे समझाते,
अगर डॉक्टर्स न होते......
न गूंगे बहरे को स्वर ज्ञान होता न मिलती अंधे को ज्योति,
न हँसी ठहाके होते न कहीं होंठो पर मुसकान होती,
लूले, लँगड़े, अपाहिज, आजीवन हाथ पैरों को तरसते।
अगर डॉक्टर्स न होते.....
सच में इंसान रूप में डॉक्टर हैं धरती पर भगवान,
निस्वार्थ सेवा करें सबकी, है यही उनकी पहचान,
रोगियों की सेवार्थ वे चैन से जागते न सोते।
अगर डॉक्टर्स न होते.......

डॉक्टर्स का घिनौना रूप भी

आज के दौर में कुछ मरीज बेरहमी से छले जाते हैं,
दीन दुखी गरीब मानुष को विविध तरीकों से सताते हैं।
देवतुल्य मानकर मंदिर में आते हैं,
जब डॉक्टर ही दैत्य बन जाते हैं।।१।।

दौलत की लालच में वे इतने अंधे हो जाते है,
बीमारियों के बहाने बेबसों के अंग निकालते हैं।
अनजाने में गरीब ही ठगे जाते हैं,
जब डॉक्टर ही दैत्य बन जाते हैं।।२।।

ऑपरेशन कक्ष में नारियों की अस्मितायें लुट जाती हैं,
कभी-कभी इस सदमें में वे अपनी जान भी गंवाती हैं।
बहन, बेटी, पत्नी संग हादसे होते हैं,
जब डॉक्टर ही दैत्य बन जाते हैं।।३।।

लिंग परीक्षण की काली कमाई हेतु कन्या भ्रुण मारते हैं,
विवश परिवार, पैसों के खातिर बेटों का सौदा करते है।
अस्पतालों में बच्चे बदल जाते हैं,
जब डॉक्टर ही दैत्य बन जाते हैं।।४।।

आचर्श्य होता है तब, बुद्धि कौशल के धनी मानवों पर,
कर्तव्यों को भूलकर वे, भारी पड़ जाते हैं दानवों पर।
देवदूत, रक्षक, क्यों भक्षक बन जाते हैं।
जब डॉक्टर ही दैत्य बन जाते हैं।।५।।

अगर कृषक न होते

अगर कृषक न होते, तो शायद हम भी न होते।।

मौसम के अनुरूप अपने खेतों में किसान ही फसल उगाते।
कब कौन फसल किस मिट्टी में उपजे, ये ज्ञान उसे ही रहते।।
अपने अनुभवन के बल पर मिट्टी को सोना बनाते।
अगर कृषक......

कड़ी धूप और कड़ी ठंड में दस-बारह घंटे काम वे करते।
खेतों की रक्षा करने को रात-रात भर भी वे जगते।।
वन पशुओं से रक्षा करने मढैया बना के सोते।
अगर कृषक......

मानसून का जुआ है खेती, वह भलीभांति जानता।
अपना खून-पसीना बहाकर, हम सबके पेट भरता।।
परिवार स्वयं का भूखा है ये बात कभी न कहते।
अगर कृषक......

बिचौलिये, साहूकार और नेता निवत लेकर जेब भरते।
बेचारे कृषक को अपनी फसल के उचित दाम भी न मिलते।।
ठेकेदार कभी ठेके में पूरी फसल ही उठवाते।
अगर कृषक......

छप्पन भोग, फाइव स्टार होटल, सब हे उनकी मेहनत के फल।
बीज, खाद, उर्वरक, यंत्र के लिए, स्वयं ऋणी बन जाता प्रतिपल।।
कर्ज, कष्ट, पीड़ा से घबराकर आत्मदाह भी करते।
अगर कृषक......

कृषकों का आत्मदाह- एक निवेदन

क्यों आत्मदाह करते तुम भाई, माँ अन्नपूर्णा साथ तुम्हारे।
धरती पर सर्वश्रेष्ठ कृत्य करते, तुम तो हो अन्नदाता हमारे।।

प्रकृति की बर्बरता से निराशा में तुम क्यों घिर जाते हो।
कभी भूमिपतियों की कट्टरता से तुम उदास हो जाते हो।।

जब कर्ज का बोझ नहीं सह पाते आत्मदाह अपनाते हो।
किन्तु ऐसे कदम से परिवार पर तुम बिजली गिरा जाते हो।।

अनाथ बच्चे, विधवा पत्नी तो भाई जीते जी ही मर जाती है।
किंकर्तव्यविमूढ़ होकर वह दर-दर न्याय की गुहार लगाती है।।

भूखे-प्यासे बच्चे भी दुराचार की राह पकड़ने होते मजबूर।
हे कृषक तुम्हारे गलत कदम से विपदायें भोगते है वे जरूर।।

भू-स्वामियों की प्रताड़ना का सच कभी समाज में तुम रखते।।
बैंक ऋण समय पर न मिलने की समस्या शासन से कहते।।

कर्ज माफी की माँगे रखकर थोड़ी सी हिम्मत भी रखते।
अधर्म और कायरता पूर्ण कृत्य न करके, समाज से लड़ते।।

यूँ आत्मदाह उचित नही है भाई, इस लोकतांत्रिक सन में।
फसल बीमा, बैंक ऋण माफी नीतियाँ बनी तुम्हारे रक्षण में।।

कृषक सुरक्षा हेतु निवेदन है कृषि विश्वविद्यालय, संस्थानों से।
लघु कृषकों को दें तकनीकी ज्ञान, उनके जोतों के परीक्षण से।।

कृषि क्षेत्र के विविध भ्रष्टाचारों पर, कड़ी लगाम लगायी जाये।
कृषि उद्योग को घाटे से उबारकर, लाभ तरकीब बतायी जाये।।

कृषि भूमि का न हो अधिग्रहण, आवासीय, औद्योगिक भवन बनाने में।
वरन् प्रमुखता दें रूस, कनाडा सम सामूहिक कृषि तकनीक मंगाने में।।

ताकि देश की सत्तर प्रतिशत जनसंख्या कृषि उपज को बढ़ा सके।
अपनी मेहनत का उचित प्रतिफल पाकर वह जीवन स्तर सुधार सके।।

बैंक ऋण माफ करने मात्र से, कृषकों की दशा नहीं सुधरेगी।
भूमि परीक्षण कर फसल, उगाने की तकनीक न विकसित होगी।।

विशेषज्ञों की टीम बनाकर निष्पक्ष रूप से कृषक का सहयोग करायें।
भारत भूमि की बहुफसली मिट्टी का उचित उपयोग उन्हें सिखाये।।

जग के अन्नदाता कृषकों का खोया आत्मविश्वास पुनः जगाना है।
उचित सम्मान कृषि श्रमिकों, कृषकों को मिट्टी को सोना बनाना है।।

जागो! देशवासियों जागो! कृषि प्रधान भारत में कृषि उपज भी बढ़ाना।
टाटा,अंबानी,बिड़ला जैसे उद्योगपतियों सम कृषकों को सम्मान दिलाना।।

आज संकल्प करें सब मिलकर गायेगें जय जवान जय किसान।
भारत भूमि पर बढ़ती जाये बंधुओं दिन प्रतिदिन इन दोनों की शान।।

गौ वंश की पुकार

अमृत तुल्य दुग्ध पीकर भी, कैसे मानव तुम दानव बन जाते।
हे हिन्दवासियों! गर्म करो भगवान कृष्ण के भक्त कहलाते।।

अस्थि, कंकाल, चर्बी का सौदाकर, लाखों रूपये मुझसे कमाते।
गौ माता को काटकर, गौमांस बेचते, तनिक न मन में परमाते।।

पंचगव्यददूध, दही, घी, गौमूत्र और गोबर तुम मुझसे ही पाते।
बलवर्द्धक, व्याधिनाशक द्रव्यों से अपना जीवन स्वस्थ बनाते।।

भूखी-प्यासी, दुर्बल वृद्धा गायों को, गौशालाओं में क्यों छोड़ते।
मेरी हत्या कर, तस्करी करते, क्यों नहीं तुम्हारे हृदय पसीजते।।

दूध डेरियों में भी तुम तो मिलावटखोरी जैसे हथकंडे ही अपनाते।
नकली दूध, दही, मक्खन, खोवा, घी बेचकर मन में न सकुचाते।

रोगी, बच्चे, जनमानस, सेवन से, कभी-कभी तो जान गंवाते।
पर मोटी रकम, रिश्वतखोरी से इन तस्करों के घर भर जाते।।

करबद्ध प्रार्थना करती हूँ तुमसे, अभयदान दे दो रे मानव।
तेरे कुल की रक्षक हूँ मैं देख, जाग! जाग! तू हे अरनव।।

तानाशाह की ताजपोशी-उत्तर कोरिया में

विश्व में आज भी है, किमजोंग जैसे तानाशाह,
उंगलियों के इशारों पर जनता को नचवाते हैं।
विदेशी अथवा हॉलीवुड फिल्मों पर है प्रतिबंध,
निर्दोष शौकीन मिजाजियों को गोलियों से भुनवाते हैं।।१।।

बेतुके अंदाज से साथियों, रितेदारों संबंधियों को,
जाने कितनी निर्ममता से मौत के घाट उतारते हैं।
अपने आतंकी कारनामों से वर्षो से जमे शान से बैठे हैं,
सत्ता शक्ति का दुरूपयोग कर, मनचाहा शासन चलाते हैं।।२।।

निवासी भी मूकदर्शक बनकर झेल रहे हैं अत्याचार,
विवश जनता की हालत उसके जुल्मों को कहती है।
नित नये जारी किये गये उसके दुस्साहस पूर्ण फरमान,
चेहरे पर बिखरी कुटिल मुस्कान, जुल्मों को बयां करती है।।३।।

जब उत्तर कोरिया की राजधानी प्योंग यांग में,
छत्तीस वर्षों बाद, छै मई को हुआ अनोखा आयोजन।
तानाशाह की ताजपोशी में, नहीं हुआ एक सप्ताह तक,
विवाह संस्कार, अंतिम संस्कार अथवा कोई आंदोलन।।४।।

ताकि तानाशाह पर न पड़े कहीं दुर्दिनों की काली छाया,
कदमों में हों उसके राष्ट्रीय शक्तियाँ, संपदा व माया।
जरा सोचिये! शादियाँ, आंदोलन तो हम टाल सकते हैं,
किन्तु भला मौत के बुलावे पर कौन नियंत्रण कर पाया।।५।।

समग्र देशवासियों, निरीह जनता पर हो रहा है जो हावी,
हास्याप्रद है ऐसे निरंकुश व्यक्ति को सत्ता सौपना।
यह तो ठीक ऐसा ही प्रतीत हो रहा है जैसे,
किसी विक्षिप्त के हाथ पड़ गया बंदूक खिलौना।।६।।

निरंकुशता की जहाँ हो गयी है सारी हदें पार,
कैसे हो पायेगा वहाँ राष्ट्र समस्या का उपचार।
अमेरिका, रूस, जापान और चीन जैसे समृद्ध राष्ट्र,
कर रहे उसके परमाणु शक्ति प्रयोग पर विचार।।७।।

आत्मरक्षा के लिये प्रत्येक राष्ट्र को है यह अधिकार,
परमाणु बमों, सुरक्षात्मक साधनों का करे विकास।
किंतु आपसी सहयोग, परमाणु-संधि पर भी करे विचार,
जनहित, विश्व कल्याण व शांति ही प्रयोग के आधार।।८।।

जय जय भारत जय मातृभूमि

सत्तर वर्षो की मेरी पीड़ा को आज किसी ने समझा।
कराह रही थी भारत माता, शीश काट रहा था दरिंदा।।जय।।

सिर पर कफन बांध अमितशाह ने कदम बढ़ाया।
गृहमंत्री बनकर राष्ट्र के निजी गृह को मुक्त कराया।।जय।।

कंधे से कंधा मिला चले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी भी।
व्यर्थ न होगा बलिदान शहीदों का यह हुंकार राष्ट्र को दी।।जय।।

न अन्याय करेगें जनता पर, न अन्याय होने देंगे।
प्राणों की आहुति दे देंगे पर राष्ट्रहित में अटल रहेंगे।।जय।।

तिहत्तरवें स्वतंत्रता दिवस पर कमीर में तिरंगा लहराया।
मुक्त गगन में सांस ली सबने, राष्ट्रगान भी मिलकर गाया।।जय।।

देख विजय भारत की, दुमन राष्ट्र पड़ोसी बौखलाया।
मदद मांगने अखिल विश्व के समक्ष उसने हाथ फैलाया !!जय।।

किंतु धर्मपरायण निष्पक्ष भारत से सबने हाथ मिलाया।
आतंकवाद को जड़ से उखाड़ने का बीड़ा पुनः उठाया।।जय।।

सवा सौ करोड़ भारतीयों ने मिल राष्ट्र का मान बढ़ाया।
धर्म जाति दल नीति से हट, मातृभूमि का मस्तक उठाया।।जय।।

धन्य धन्य यह भारत भूमि जिसमें हमने जीवन पाया।
एकता, अखंडता और राष्ट्ररक्षा का सबने संकल्प उठाया।।
जय जय भारत जय मातृभूमि

हँसता खिलखिलाता परिवार हमारा

डॉ. रमेश गुप्ता - डॉ. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)

मायका पक्ष

ससुराल पक्ष

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)
जन्म - 05 मई 1956
पिता-माता - स्मृति शेष श्री चंद्रिका प्रसाद - सरोज मोर, कटनी
पति - डॉ. रमेश गुप्ता, नशामुक्ति क्लीनिक
पुत्र-पुत्रवधु - इंजी. सौरभ - इंजी. शुभ्रा
पुत्री - इं. सोनिका - दामाद इं. सौरभ मांडल
बगिया के फुल - सृष्टि, श्रीनिका, श्रेयान
शिक्षा - पीएच.डी. (अर्थशास्त्र), एम.ए. हिन्दी आयुर्वेद रत्न
पद - सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र, केशरवानी महाविद्यालय
कार्य - प्राचार्य- आदित्य वीमेन कॉलेज जबलपुर
सम्प्रति - आजीवन सदस्य - हिन्दी लेखिका संघ, जबलपुर, गहोई बंधु मासिक पत्रिका, अखिल भारतीय वैश्य महासभा, अखिल भारतीय गहोई महिला सभा।
विघा - लेख, कविता, निबंध, संस्मरण, कहानी, लघुकथा, रिपोर्ट्स आदि।
पता - डॉ. रमेशचन्द्र गुप्ता, 250 दक्षिण मिलौनीगंज, पोस्ट आफिस गली, जबलपुर (म.प्र.)
संपर्क - 2650060, मो. 9993253556, 9300109040
प्रकाशन - प्रकृति के रंग बच्चों के संग (बाल गीत संग्रह),
भारत भूमि वंदन और चिंतन (सामयिक काव्य संग्रह)
महाविद्यालयीन शोध पत्र लेखन, लेख, कवितायें, कहानियाँ, रिपोर्ट्स
संपादन - महाविद्यालय पत्रिका 'केसर' के स्वर्ण जयंती विशेषांक 'स्मारिका'।
सह संपादन - महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका 'जागरण'
1975 से निरंतर अनेक पत्र-पत्रिकाओं समाचार पत्रों में रचनाओं निरंतर प्रकाशन
सम्मान - अंतरा शब्द शक्ति साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान 2019

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-059-9
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध